विवान 8

पाठ 1. जीवन का झरना

कविता का उद्देश्य

यह कविता झरने के माध्यम से जीवन को गतिशील बनाए रखने की सीख दे रही है। इस कविता का उद्देश्य बच्चों को स्वयं पर विश्वास रखने तथा कठिन परिस्थितियों से मुकाबला करने के लिए प्रेरित करना है।

कविता का सारांश

जीवन एक झरने के समान है। जिस प्रकार उतार-चढ़ाव को समान रूप से झेलते हुए झरना आगे बढ़ता जाता है उसी प्रकार मानव की प्रकृति भी आगे बढ़ते रहने की है। झरने के समान ही बाधाओं से जूझता हुआ मानव प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। जीवन सिर्फ़ चलने का नाम है, रुक जाना तो मृत्यु के समान माना गया है। झरना हमें सीख देते हुए कहता है कि आगे बढ़ो तथा पीछे मुड़कर मत देखो। चलना ही इस ज़िंदगी का लक्ष्य होना चाहिए। रुकने वाले को मंज़िल पाने का सुख कभी नहीं मिलता। रुकना तो मौत की निशानी है।

अध्यापन संकेत

बच्चों से कविता का सस्वर वाचन करवाएँ। कठिन शब्दों का अर्थ बताएँ। बच्चों को कविता का मूल भाव समझाएँ। पाठ में निहित जीवन-मूल्यों को बच्चों में विकसित करें। कविता की पंक्तियों में छिपा भावार्थ स्पष्ट करें।

यह जीवन .... गाता है।– इन पंक्तियों में कवि मानव जीवन की तुलना बहते हुए झरने से करते हुए कहते हैं कि यह जीवन एक झरने की तरह है जो निरंतर बहता ही रहता है। जिस प्रकार झरने के दो किनारे होते हैं, उसी प्रकार सुख-दुख जीवन रूपी झरने के दो किनारे हैं। झरना पर्वत से निकलने के बाद, बहकर घाटी में आता है और मैदानों की ओर बहता चला जाता है अर्थात् यह एक निश्चित दिशा में बहता है, उसी प्रकार यह जीवन भी नहीं रुकता। मनुष्य के जीवन में चाहे कितने ही सुख-दुख आएँ यह समय के साथ आगे बढ़ता ही जाता है।

बाधा के रोड़ों .... ही जाता है।– इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार झरना चट्टानों को काटता हुआ और पत्थरों से टकराता हुआ आगे की ओर बढ़ता ही जाता है, उसी प्रकार मनुष्य का जीवन संघर्षमय होता है। उसे पल-पल नई चुनौतियों का सामना करना होता है। जीवन में बहुत सी बाधाएँ और उतार-चढ़ाव आते हैं लेकिन जो व्यक्ति इन बाधाओं को पार कर लेता है वही सफल होता है किंतु वह व्यक्ति जो बाधाओं से होने वाले कष्टों से घबराकर उनसे दूर भागता है वह उस नाविक की तरह पछताता है जो लहरों से डरकर सागर में नहीं उतरता और किनारे पर ही रह जाता है अर्थात् वह व्यक्ति जीवन में पीछे रह जाता है।

निर्झर में गति .... कहता है।– इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि झरने का बहना ही उसका जीवन है। अगर झरना नहीं बहेगा तो वह एक जगह ही रुक कर सड़ने लगेगा और एक दिन उसका जल सूख जाएगा। इस प्रकार उसका अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा। मनुष्य जीवन भी इसी प्रकार आगे बढ़ते जाने का नाम है। यदि मनुष्य अपने कटु अनुभवों को याद करके दुखी होता रहेगा तो उसका जीवन भी निराशा में डूब जाएगा और वह अपने

जीवन को नई दिशा नहीं दे पाएगा। इसलिए हमें पुराने निराशाजनक दिनों को भुलाकर तथा आने वाले कल की व्यर्थ चिंता न करके सदैव आगे बढ़ते रहने का उद्यम करना चाहिए।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- प्रकृति हमें कई रूपों में कुछ न कुछ संदेश देती रहती है। जब वर्षा समय पर होती है, चारों ओर हरियाली नज़र आती है, तब तो हम तुरंत समझ जाते हैं कि प्रकृति खुश है। पर अत्यधिक वर्षा होने या बिलकुल वर्षा न होने पर हम क्यों नहीं समझ पाते कि प्रकृति हमसे नाराज़ है। हमारे द्वारा प्रकृति के अंधाधुंध दोहन के कारण वह हम पर क्रोधित है! तुम क्या समझते हो तथा इससे कहाँ तक सहमत हो?
- जीवन आगे बढ़ने का नाम है, पीछे मुड़कर देखने का नहीं। पर क्या वाकई में हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए? यदि हाँ, तो वे कौन-से खट्टे-मीठे अनुभव हैं जो तुम्हें पीछे मुड़कर दिखाई देते हैं। और यदि नहीं, तो क्यों?

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।